प्राक्कथन

"अमृतलाल नागर के उपन्यासों के संवादों की भाषा का समाजशास्त्रीय परिशीलन" शोध-विषय के निर्धारण से लेकर निष्कर्ष निष्पादन तक जिन समाजभाषिकी के स्वतंत्र ग्रन्थों, शोध-प्रबन्धों तथा शोध लेखों से सहायता ली है, उनके लेखकों, शोधकर्ताओं, शोध-निर्देशकों तथा शोध-लेखों के लेखकों की हृदय से आभारी हूँ। इस शोध-कार्य के प्रेरक, प्रोत्साहक तथा सहायक राणा शिक्षा शिविर डिग्री कॉलिज में भौतिक विज्ञान के अध्यक्ष, मेरे पिताश्री प्रो० दिलीप चन्द वर्मा रहे हैं। आर्थिक सहयोग के साथ-साथ पुस्तकें उपलब्ध कराने के प्रयास तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में बहिरंग तथ्यों के संकलन-कार्य में भी मेरे पिता जी ने मनोयोग से सहयोग किया है। उनकी कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं हैं। आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, लखनऊ विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, अलीगढ़ विश्वविद्यालय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के भाषावैज्ञानिक केन्द्रों से समाजभाषिकी से सम्बन्धित ग्रन्थों के अध्ययन तथा उन ग्रन्थों से बहिरंग तथ्यों के संकलन में मेरे पतिदेव ने भी मेरी सहायता की है, अतः मैं उनकी भी हृदय से कृतज्ञ हूँ। उक्त विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों के उदार तथा मानवीय व्यवहार से मैं सर्वाधिक प्रभावित रही हूँ, अतः इन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

शोध-प्रक्रिया तथा शोध-पद्धति का परिज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने शोध-निर्देशक डॉ० तिलक सिंह की पुस्तक "नवीन शोधविज्ञान" सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुई है। डॉ० तिलक सिंह से मुझे व्यावहारिक स्तर पर शोध-प्रविधि की जानकारी प्राप्त होती रही है, उनका पितृतुल्य स्नेह भी मुझे प्राप्त हुआ है, अतः उनके प्रति मैं श्रद्धावनत हूँ।

एस०एस०वी० कॉलिज, बापुड़ के हिन्दी विभाग से हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ है, अतः सभी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। महाविद्यालय के प्राचार्य, डॉ० हरिओम गुप्ता के स्नेहिल तथा सद्भावनापूर्ण व्यक्तित्व से मैं सर्वाधिक प्रभावित रही हूँ, अतः उनके प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ।

डॉ० नसीमुद्दीन, टंकक ही नहीं, हिन्दी के विद्वान हैं। उनके टंकण कार्य ने ही नहीं अपितु शोध-ज्ञान ने भी मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया है। अतः भाई नसीमुद्दीन के प्रति भी अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

अनुसंधात्री,
विनीता रानी
श्रीमती विनीता रानी